

पद १७३

(राग: मांड - ताल: धुमाळी)

तूं शाहवली माशूक दीन दुनिया का। लाशरीक रब मालिक है
कुल शय्यन् का ॥१॥ आशिक के लिये माशूक बनके आते हो।
परदे मे छुपा तसबीर बता जाते हो ॥२॥ टुक झलक बताके मुँह
को फिरा लेते हो। मुरदों को नीम बिसमिल ही बना देते हो ॥३॥
क्या गज़ब है सूरत देख हात मलते हैं। सद हजार घायल तेरी
गली में रोते हैं ॥४॥ एक नजर देख आशिक तो यहीं मरते हैं। जो

फिदा हैं तुम पर कहो कभी बचते हैं ॥५॥ जो इश्क का मारा यही
शेर पढता है। जो मुरशदकामिल हो सो रम्ज़ पाता है ॥६॥ ये बंदा
मानिक सच तो यही कहता है ॥ आशिक को कभी आराम नहीं
मिलता है ॥७॥